काव्य भारती

महाव्रती, महाकवि, विद्या वाचस्पति
श्रमणाचार्य विभवसागर मुनि

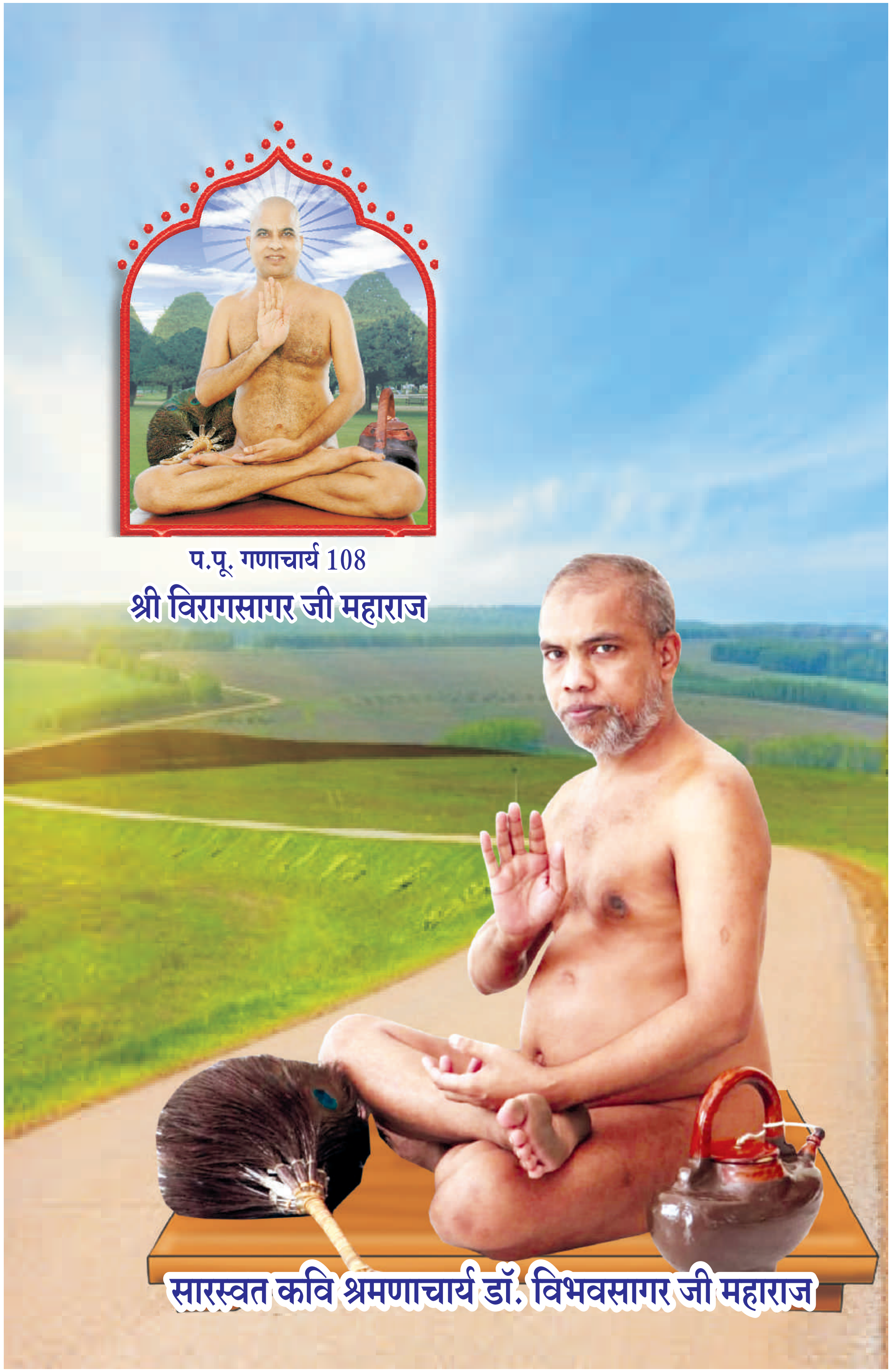

काव्य भारती

महाव्रती, महाकवि, विद्या वाचस्पति

श्रमणाचार्य विभवसागर मुनि

कृति	: काव्य भारती
शुभाशीष	: प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज
कृतिकार	: सारस्वत कवि श्रमणाचार्य 108 श्री विभवसागर मुनि
संस्करण	: प्रथम
प्रकाशन वर्ष	: 2022
प्रकाशक	: श्रमण श्रुत सेवा संस्थान, जयपुर-इन्दौर
मूल्य	: स्वाध्याय
प्राप्ति	: सौरभ जैन, जयपुर सम्पर्क-9829178749 टी.के. वेद, इन्दौर सम्पर्क-9425154777 प्रतिपाल टोंग्या, इन्दौर सम्पर्क-9302106984
मुद्रक	: ज्योति ग्राफिक्स, जयपुर मो. 8290526049

प्रस्तावना

काव्य कलश

- आचार्य विभव सागर

प्रस्तुत कृति काव्य भारती विश्व हिताय उदार भावनाओं से उद्भूत, निसर्ग प्रेम, राष्ट्रक्षेम की पवित्र प्रार्थनाओं, शुभकामनाओं से भरा मधुर काव्य कलश है।

मेरी संवेदनाएँ मेरी कविताएं बनीं। मेरी पवित्र आत्मा के गर्भ से परोपकारी कविताओं का जन्म हुआ। इसीलिए मेरी कविताएँ मेरे पुत्र-पुत्रियाँ हैं। मैंने अपनी कविताओं को काव्य के गुणों से सदा सर्वत्र सँवारा है उचित मात्रा में। परछाई से दूर रखा। आवश्यकतानुरूप समुचित्र मे नाना रसों का रसपान कराया। मैं जिस जिनवाणी माँ के रसपान से शास्त्रकवि बना तो मैंने काव्य पुरुष होने के नाते अपने काव्य पुत्र-पुत्रियों को शब्दालंकार एवं अर्थालंकारों से अलंकृत किया। तथा काव्यानुशासन में सदा रहना सिखाया। मेरे आत्मीय भावों, गुणों का अवतरण सहज रूप से मेरे काव्य पुत्र, कविता पुत्रियों में होता रहा है। मैं हूँ। अथवा मेरा काव्य पुत्र है। दोनों में भिन्नता करना विज्ञों को कठिन, अज्ञों को आसान लगता है। क्योंकि संस्कारों में समानता, प्रमुख कारण है।

कविताओं के शीर्षक ही मेरे पुत्र-पुत्रियों के शुभनाम हैं।
उनमें सर्वप्रथम प्रार्थना, वीर-अभिनंदन, सरस्वती वंदना,
विश्व पर्यावरण संरक्षण-संवर्द्धन ज्ञापन हेतु विश्व-
पर्यावरण दिवस पर प्रस्तुत पर्यावरण कविता तथा
विश्व परिवार दिवस पर प्रस्तुत पारिवारिक एकता,
प्रेम और महत्त्व को दर्शाने वाली परिवार कविता है।
गाँव प्रेम को प्रकट करने वाली अपना गाँव कविता है, तो
घोर निराशा के गहन तमस् में पूर्ण आशा का उजाला
देने वाली पुरुषार्थ कविता तो जीवन दायिनी महामंत्र है।

जिसका नाम सुनते ही लोग भय से
काँपने लगते हैं उस परीक्षा पर मेरी एक नहीं अनेक
श्रेष्ठ कविताएँ हैं क्योंकि मेरी परीक्षा ही मेरी सफलता
का प्रमाण पत्र है। वहीं निर्भय और निष्पाप जीवन
जीकर सुखी रहने का उपाय धैर्य कविता में दृष्टव्य है।
इन कविताओं में ऐतिहासिक महापुरुषों के जीवन-चरित्र
को प्रकाशित कर जीवन में सद्गुणों को जन्म देने की
अद्भुत कला है।

वह नदी, समुद्र नहीं जिसका तट
न हो और ऐसा कोई श्रेष्ठ आदर्श महिला, पुरुष नहीं
जिनके जीवन में संकट न हो। जैसे तट नदी, समुद्र
के संरक्षक होते हैं वैसे ही संकट मनुष्यों के संरक्षक
होते हैं जो स्वच्छंद होने से बचाते हैं। तथा स्वरूप में
रखते ऐसी विचार शक्ति के बीजाणु, रस, रसायन
कविताओं में मिले-घुले हैं जिस कविता में उसका नाम है-
धैर्य।

लक्ष्य चुनना और अपने पवित्र लक्ष्य पर सदा चलते रहने
का अदम्य साहस भरने वाली लक्ष्य कविता है। तो
प्राणियों के विवेक चक्षुओं को खोलने वाली श्रेष्ठ कविता
"विवेक" है। गुरु भक्ति शिष्य के जीवन का प्रथम महोत्सव है
इस रहस्य के साथ कृतज्ञता गुण से ओत-प्रोत गुरु भक्ति में
समर्पित "गुरु स्मरण" नई कविता अतुकांत है।

लोकनायक, लोक मान्य मर्यादा पुरुषोत्तम
श्रीराम तथा स्वामीभक्त आदर्श सेनापति कृतान्तवक्त्र
के संवाद को प्रस्तुत करता वैराग्य वर्द्धक वैराग्य संवाद
है। तथा महासती अंजना की पीड़ा के समय पति और
परमात्मा का अद्भुत स्मरण कराने वाली विरह वेदना
से भरी संवेदना जननी संवेदना कविता है।

गुणग्राहकता सज्जनों का श्रेष्ठ
लक्षण है। इस सन्दर्भ में गुणवान कविता रचित है।
और भी अन्य-अन्य विषयों पर रची गयी समकालीन
कविताएँ जो सदा प्रेरणादातृ सिद्ध होती हैं।

छन्द रचना, छन्दशास्त्र रचते समय
विभिन्नों छन्दों के उदाहरण रूप में रची गयीं
श्रेष्ठ कविताएँ भी इसमें समाहित हैं। जो काव्य के
लालित्य गुण को एवं प्राचीन साहित्य को विविध
विधाओं में प्रस्तुत करने वाले मेरी मनो भावनाओं का
मनोहर चित्रण है।

"मेरी कविता" शीर्षक में कविता रचने के उद्धेश्य दर्शाये हैं।
"संकल्प" नामक कविता में मैंने अपना संकल्प ही स्पष्ट
कर दिया, यह प्रतीकात्मक कविता है। "समर्पण" में सर्वस्व
समर्पण कर अभ्युदय औ निःश्रेयस् पथ पर अग्रसर किया।
भाग्य कविता तो बड़ी ही रोचक कविता है जिसमें चंदनवाला
की वीर भक्ति तो श्राविका रत्न शबरी की श्रीराम की पात्र-
भक्ति तथा बालक अकृत पुण्य की मुनिभक्ति के आदर्श
उदाहरण हैं। "संत आगमन" कविता में संत समागम के
श्रेष्ठ सुफल बतलाकर प्रेरणा दी। चित्त में शांतिराज्य,
एवं विश्व साम्राज्य हासिल करने की कला है। "जिन्दगी" में
स्वावलम्बन को आनंद दर्शाकर कर्तावादी मान्यता का
खण्डन किया है। परोपकार की प्रेरणा भरती हुए तथा
निद्रा विजय को श्रेष्ठ साधना बताने वाली निद्राजय है।
प्रतिकूल परिस्थिति में मनःस्थिति को सँभालने वाली
अनेक कविताएँ हैं जो जीवन दायिनी शक्तियाँ हैं, महामंत्र हैं।
तीर्थंकर भगवान महावीर का परिचय दर्शन कराती "वर्द्धमान
वंदना" "मेरे गुरु का ज्ञान कराती हुई "विरागवंदना" एवं
मेरे अग्रज आदर्श आचार्य की आचार्य वंदना करती हुई
विशुद्ध वंदना है। जो शार्दूल विक्रीडित छन्द में गेय है।
मैं अपनी कृति का मूल श्रेय मेरे काव्य देवता दीक्षा-
शिक्षा संयम दाता श्री गुरुवर विराग सागर जी को देकर धन्य हूँ।
पवित्र कार्य में सहयोगी रहे श्रमण शुद्धोपयोग सागर जी, आर्यिका
रत्न अर्हंश्री माताजी के लिए शुभाशीर्वाद...। तथा श्रुतदाती
श्री विजय-वाणी छाबड़ा किशनगढ़ (राज.) एवं सकल समाज
मनावर को आशीष..। सिद्धचक्र विधान 2022, प्रवास प्रसंग
पर यह कृति प्रकाशित हो रही। शुभमस्तु...।

आर्यिका क्षमाश्री माताजी

(संघस्थ–गणिनी आर्यिका विजयमती माताजी)

समाधि : 17.11.2011

धर्ममाता के पुण्य स्मरणार्थ

श्री निर्मल–गुणमाला, विजय–वाणी, विनय–सारिका
अवनि, सिद्धि, अपेक्षा, श्रुति, उत्कर्षा छाबड़ा परिवार

मदनगंज–किशनगढ़ (राज.) मो. 9090099501

अनुक्रमणिका

1.	प्रार्थना	1
2.	वीर अभिनंदन	2
3.	सरस्वती प्रार्थना	3
4.	पर्यावरण	5
5.	परिवार	12
6.	अपना गाँव	14
7.	पुरुषार्थ	16
8.	परीक्षा-1	17
9.	परीक्षा-2	18
10.	परीक्षा-3	20
11.	परीक्षा-4	21
12.	धैर्य-1	22
13.	लक्ष्य-2	23
14.	लक्ष्य	24
15.	प्रतिज्ञा	25
16.	विवेक	26
17.	काव्य तीर्थ	27
18.	गुरु स्मरण	28
19.	वैराग्य संवाद	29
20.	सती अंजना संवेदना	31
21.	मृत्यु	32
22.	गुणवान बनो	33
23.	मेरी कविता	34
24.	प्रार्थना	36
25.	संत आगमन	37
26.	समर्पण	38
27.	संकल्प	39
28.	भाग्य	41
29.	परोपकार	42
30.	कर्तव्य	43
31.	कमजोर मत हो	44
32.	जिन्दगी	45
33.	वर्द्धमान वंदना	46
34.	विराग वंदना	48
35.	विशुद्ध वंदना	50
36.	समाधि भक्ति	52
37.	ईश प्रार्थना	56

प्रार्थना

–आचार्य विभवसागर

प्रार्थना के छन्द पावन, हे प्रभो! सुन लीजिए!
साधना के दिव्य पथ में, ध्यान हम पर दीजिए।।
हम लघु बालक तुम्हारे, तुम हमारे देवता।
ज्ञान मंदिर में पधारे, अर्घ लेकर नम्रता।।
मंत्र अनुशासन सिखा गुरु, कृपा हम पर कीजिए।
साधना के दिव्य पथ में, ध्यान हम पर दीजिए।।
प्रार्थना.....

शिक्षा बने सर्वोषधि, यह स्वस्थ भारत देश हो।
विश्व के कल्याण हेतु, आपका संदेश हो।।
एक भारत पूर्ण भारत, एकता रस पीजिए।
साधना के दिव्य पथ में, ध्यान हम पर कीजिए।।
प्रार्थना.....

काश्मीर से कन्या कुमारी, एक भारत वर्ष हो।
राष्ट्रहित तन-मन समर्पित, राष्ट्रहित आदर्श हो।।
जीना सफल होगा हमारा, राष्ट्रहित में जो जिये।
साधना के दिव्य पथ में, ध्यान हम पर दीजिए।।
प्रार्थना के छन्द.....

***

15.6.2021
नौगामा

वीर अभिनंदन

–आचार्य विभवसागर

जो जिये स्वदेश के लिए,
जो मरे स्वदेश के लिए।
आज याद आ रहे मुझे,
हो प्रणाम वीर के लिए।।

देश के लिए हुए विदा,
नाम धन्य हो गया सदा।
ताज मात भारती लिए,
वीर चक्र पुत्र के लिए।।

राष्ट्र संविधान में तुमें,
और राष्ट्रगान में तुमे।
देश याद ये करे सदा,
भारती सपूत सर्वदा।।

भारतीय भारतीय हो,
नेक एक आदमी अहो।।
विश्व संपदा न चाहिए,
दानवीर विश्व के लिए।

एकता अखण्डता सदा,
हो स्वतंत्रता हि सर्वदा।
प्रेम क्षेम शांति सौख्यदा,
हो प्रवाहमान नर्मदा।।

***

अभिनंदन वर्द्धमान जैन
विंग कमांडर, वायुसेना

सरस्वती प्रार्थना

–आचार्य विभवसागर

श्री जिनवाणी मात सहायी,
ज्ञान प्रदायी भाग्य जगायी।
पाप मिटायें पुण्य बढ़ायें,
माँ जिनवाणी शीष झुकायें।।1।।

भाव भरा आमंत्रण मेरा,
लो जिनमाता हूँ सुत तेरा।
शब्द सिखाओ, अर्थ बताओ,
मात मुझे धीमान बनाओ।।2।।

ज्ञान कला का हूँ अभिलाषी,
ध्यान कला का भी अभिलाषी।
हे जिनमाता ज्ञान कला दे,
सीख सिखादे ध्यान कला दे।।3।।

सप्त सुरों को मैं न हि जानूँ,
गीत कला संगीत न जानूँ।
एक तुझे आराध्य हि मानूँ,
भाव भरे दो शब्द सुनादे।।4।।

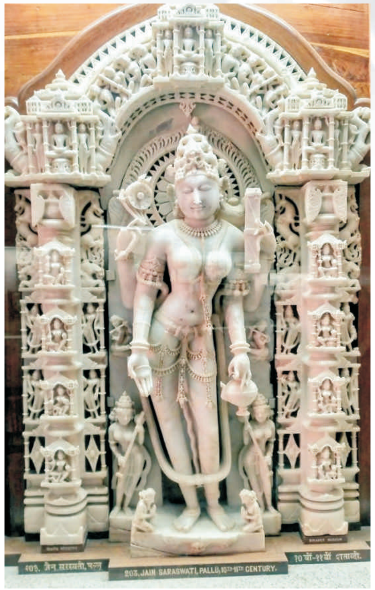

हे उपकारी श्री जिनवाणी!
पूज्य हमारी माँ जिनवाणी।
मैं शिशु तेरा गोद बिठाले,
आँचल का तू पान करा दे।।5।।

आगम न्याय-प्रमाण सिखादे,
आत्म कला अध्यात्म सिखादे।
हे जिनवाणी! दर्श दिखादे,
भूल करूँ तो भूल बतादे।।6।।

***

पर्यावरण

–आचार्य विभवसागर

हमको पेड़ लगाना है।
पर्यावरण बचाना है।
पर्यावरण विशुद्ध कहाँ ?
पानी-पवन पवित्र जहाँ।

नदियाँ झरनें बहें जहाँ।
झुण्ड हिरण के रहें जहाँ।।
पंछी कलरव नाद करें,
प्यार भरा संवाद करें।।
ऊँचे-ऊँचे वृक्ष जहाँ,
फल देने को नम्र जहाँ।।
वन का दृश्य सुहाना है।
पर्यावरण बचाना है ।।1।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
हरे-भरे यह सुंदर वन,
स्वस्थ बनाते हैं तन-मन ।।
प्राणवायु दाता यह वन,
जीवन दाता सुंदर वन ।।
वन है तो हरियाली है,
वन है तो दिवाली है ।।

वन है तो सब तरुपतियाँ,
वन है तो सब औषधियाँ ।।
वन को और बढ़ाना है,
पर्यावरण बचाना है ।।2।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है ।
वन से बादल आते हैं,
बादल जल बरषाते हैं ।।
जल पर्वत पर गिरता है,
तब ही झरना झरता है।।
जड़ी-बूटियों से मिलकर,
शुद्ध रसायन में घुलकर ।।
जल नदियों में आता है,
सर्वोषधियाँ लाता है ।
औषधि वृक्ष उगाना है,
पर्यावरण बचाना है ।।3।।

हमको पेड़ लगाना है।
पर्यावरण बचाना है ।
सुन्दर-सुन्दर, सुन्दर वन,
रंग-बिरंगे सुन्दर वन ।।
छाया वाले सुन्दर वन,
जल-फल देते सुन्दर वन ।।
ये निसर्ग परिचायक वन,
जीवों को सुखदायक वन ।।

तीर्थंकर के दीक्षा वन,
ऐसे वन का अभिनन्दन ।।
नाता बहुत पुराना है,
पर्यावरण बचाना है ।।4।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है ।
वृक्षों से रचता है वन,
वृक्ष बचाते हैं जीवन ।।
एक वृक्ष सौ पुत्र कहो,
सदा वृक्ष की छाँव रहो ।।
वृक्षों के फल खाना है,
फल के रस भी पीना है ।।
सदा वृक्ष का ज्ञान रखो,
जीव दया का भाव रखो ।।
कटते वृक्ष बचाना है,
पर्यावरण बचाना है ।।5।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
वन को देखें, जानें हम,
कितना प्यारा वन मधुवन ।।
स्वच्छ हरित सम्मेद शिखर,
यहीं रहो बस जीवन भर ।।
वन जाते सो बन पाते,
वन में निज भगवन पाते ।।

तीर्थंकर को प्यारा वन,
सीताराम लखन का वन ।।
एक ही मेरा गाना है,
पर्यावरण बचाना है ।।6।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है ।
घने-घने जो जंगल हैं,
अखिल विश्व को मंगल हैं ।
आत्मशांति के श्रेष्ठ सदन,
शून्य, शांत, नीरव निर्जन ।।
इमली, पीपल, बैरी वन,
तिलक, अशोक, बहेंरे वन ।।
बरगद, अक्षरोट, जामुन,
वृक्षों से रचता है वन ।।
धरती स्वर्ग बनाना है,
पर्यावरण बचाना है ।।7।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है ।
केला, आम, कदम्ब यहाँ,
सेब, संतरा, निम्ब यहाँ ।।
दिखते ताल, तमाल यहाँ,
राल, रसाल, सु-साल यहाँ ।।
सप्तपर्ण सागौन खड़े,
ऊँचे-ऊँचे बहुत बड़े ।।

पथिकों को पाथेय मिले,
वन स्वागत पा ध्येय मिले ।।
वन को मित्र बनाना है ।
पर्यावरण बचाना है ।।10।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है।
हर्र बहेरा यहाँ फला,
मिला आँवला लो त्रिफला,
अजवायन, अजमोंद यहाँ,
मैंथीदाना, सौंठ यहाँ,
लौंग, इला, सब चव्य जहाँ,
बड़ी सुपारी, पान वहाँ ।।
श्वेत, लाल नाना चंदन,
करते सबका अभिनंदन ।।
छाँव-छाँव में आना है,
पर्यावरण बचाना है ।।11।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है ।
देखो-देखो श्यामलता,
ऐसे फलती प्रेमलता ।।
मेढासिंगी, बेल जहाँ ।
मैथी, सेंम, चिरोल जहाँ ।।
जहाँ रसीले ईख खड़े,
काजू किसमिस दाख पड़े ।।

वृक्ष सभी ये मन भावन,
जहाँ वृक्ष वह नंदनवन ।।
वन का साथ निभाना है,
पर्यावरण बचाना है ।।8।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है ।
नंदी, कौह, वकौली के,
चम्पा और चमेली के ।।
कुन्द-कुन्द, मचकुन्द यहाँ,
तन-मन को आनंद यहाँ ।।
पारिजात की गंध यहाँ,
कमल, गुलाब-सुगंध यहाँ ।।
भोजपत्र के प्यारे वन,
लिखने का करता है मन ।।
ऐसे वृक्ष लगाना है ।
पर्यावरण बचाना है ।।9।।

हमको पेड़ लगाना है
पर्यावरण बचाना है ।
कहीं खजूर, बिजौरा वन,
नारंगी ने मोहा मन ।।
पुरुष प्रमाण अनार खड़े,
फल देने तैयार खड़े ।।
वृक्ष नारियल फल देते,
भोजन देते जल देते ।।

देखो-सीता! सुन्दर वन,
बोले भैया - राम- लखन ।।
राम राज्य फिर लाना है,
पर्यावरण बचाना है ।।12।।

हमको पेड़ लगाना है।
पर्यावरण बचाना है।
वन है तो नदियाँ-झरना,
वन है तो गंगा-यमुना ।।
यही सुरक्षा तंत्र यहाँ,
आत्म साधना मंत्र यहाँ ।।
वन है तो वन जीव अरे,
जंगल होंगे हरे-भरे ।।
वन हैं तो वनवासी हैं
वन हैं तो संन्यासी हैं ।।
जीवन स्वस्थ बनाना है ।
पर्यावरण बचाना है ।।13।।

विश्व पर्यावरण दिवस
5 जून, 2021
नौगामा (राज.)

***

परिवार

–आचार्य विभवसागर

आनंददायी परिवार मेरा।
है सौख्यदायी परिवार मेरा।।
संस्कारशाली परिवार मेरा।
सम्मानदायी परिवार मेरा।।1।।

ये संघ प्यारा परिवार मेरा।
ये संघ न्यारा परिवार मेरा।।
दे संघ साता सबको सहारा।
श्री संघ मेरा गुण का पिटारा।।2।

विश्वास देता हम हैं तुम्हारे।
आपाद कालीन सदा सहारे।।
हारो न भाई! यह जंग ऐसे।
साथी खड़े हैं हम भी सदा से।।3।।

ये प्यार मेरा तुमको पुकारे।
जीते रहो आप बनो सहारे।।
ना हार जाना हमने सिखाया।
ऐसा अनोखा परिवार पाया।।4।।

होंगे जहाँ पे हम हैं वहाँ पे।
चाहे अँधेरा दिखवे वहाँ पे।।
संघर्ष में साथ हमी खड़े हैं।
जो भी लड़ेंगे उनसे बड़े हैं।।5।।

हैं दूर मेरे मुझसे भले ही।
हैं साथ मेरे मुझको पता है।।
ये ही अनोखा अनुराग मेरा।
जोड़े रखे हैं परिवार मेरा।।6।।

विश्व परिवार दिवस
15 मई, 2021
नौगामा (राज.)

अपना गाँव

–आचार्य विभवसागर

अपनेपन का अहसास करता
अपना गाँव
भाई-चारा खूब निभाता,
अपना गाँव
एक छाँव में साथ बिठाता,
अपना गाँव
खाने से पहले आने वालों को भोजना खिलता,
अपना गाँव
अपशिष्ट भोजन, नाली में नहीं बहाता,
अपना गाँव
घर के दुधारु पशुओं को सानी बनाता,
अपना गाँव
इंसान की तो बात ही क्या
पशुओं को भी प्रेम से पानी पिलाता
अपना गाँव
भाषा नहीं, भाव समझाता
अपना गाँव
पैसा नहीं, प्यार लुटाता
अपना गाँव
पढ़ा-लिखा जरुर कम है

पर आचार-विचार सही
माटी-सा मट-मैला तन
पर सबके चेहरे पर कितना भोलापन
भोलेपन का भान कराता
अपना गाँव
एक घर एक चूल्हा
नियम निभाता अपना गाँव
निभो-निभाओ
पाठ सिखाता
अपना गाँव

***

पुरुषार्थ

–आचार्य विभवसागर

यह काल नहीं अब व्यर्थ करो।
पुरुषार्थ करो, पुरुषार्थ करो।।
यह काल न वापिस आ सकता।
अतएव उठो पुरुषार्थ करो।।1।।

जितना श्रमशील बने नर जो।
उतनी उपलब्धि सदा मिलती।।
श्रम निर्मित भाग्य रचा करता।
उपहार सदा नर को मिलता।।2।।

श्रम से सब साध्य नहीं यदि तो।
निज भाग्य रचा श्रम सार्थ करो।।
श्रम भाग्य जहाँ मिल जाय सखे!
उपलब्ध स्वतः निज लक्ष्य करो।।3।।

पुरुषार्थ परायण मानव ही,
निज सिद्ध करे सब कार्य यहीं।
धरती नभ में कुछ भेद नहीं
सब लभ्य उसे उपलब्ध यहीं।।4।।

वह हार नहीं जयकार कहो,
जिसमें पुरुषार्थ सदा चलता।
श्रम वीर बनो, श्रमशील बनो
श्रम का फल उन्नति ही फलता।।5।।

***

परीक्षा-1

(उपजाति छन्द)

–आचार्य विभवसागर

होती परीक्षा अपने गुणों की,
होवे कहीं भी किस रूप में वो।
मेरी परीक्षा कब कौन लेगा?
पता नहीं है उस देवता का।।1।।
होना बड़ा तो नित दो परीक्षा,
होना खरा तो अब दो परीक्षा।
सोना कसौटी पर जो कसा है,
सोना वही तो बहुमूल होता।।2।।
इंसान हे! तू घबरा न जाना,
ना धैर्य खोना नहि चूक जाना।।
आलस्य तेरा इक शत्रु होगा,
प्रयत्नशाली जय शीघ्र पाना।।3।।
महान सोचो न हि हीन सोचो,
विचार तेरी करते परीक्षा,
होगी परीक्षा जब भी जहाँ पे,
विचार देंगे पहली परीक्षा।।4।।

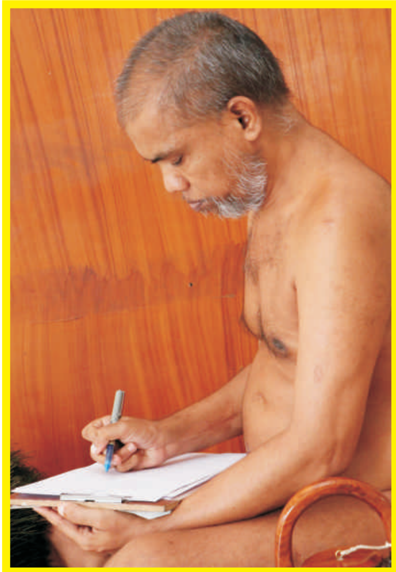

हारो व जीतो यह बात छोड़ो,
संकल्प साधो वह लक्ष्य पाना।
होके निरालस्य सुयत्नशाली,
देना परीक्षा नर जीत तेरी।।5।।
इंसान हारा कब देवता से,
आचार तेरा नर ! प्राण जो है।
माथा झुकाते सुर-देवता हैं,
तीर्थंकरों का इतिहास देखो।।6।।

***

परीक्षा-2

(छन्द-इन्द्रवज्रा)

हे चंदना तू प्रण चूक जाती,
क्या द्वार तेरे प्रभु वीर आते।
होती न चर्या यदि वीर की जो,
क्या चंदना के गुण आज गाते।।1।।

मैनासती जो न हि भाग्य माने,
श्रीपाल जैसा वर भी न पाती।
वो भाग्यशाली श्रम ना जुटाती,
क्या कुष्ठ पीड़ा पति की मिटाती ?।।2।।

ना प्राण देते निकलंक भैया,
क्या देख पाते अकलंक स्वामी।
जो हार जाते अकलंक स्वामी,
क्या जैन वाणी जयवंत होती ?।।3।

चूको न मौका अब ये सुहाना।
संन्यास धारो भव पार जाना।।
नौका मिली है गुरु है खिवैया।
बैठो इसी में सुनके तराना।।4।।

जो भूल जाते जिन भक्ति तेरी,
क्या टूट पाते वह जेल ताले।
क्या स्तोत्र भक्तामर सिद्ध होता,
क्या मानतुंगो जयवंत होते।।5।।

पिण्डी फटी तो चमत्कार देखा,
चंदा प्रभो का जिन बिम्ब देखा।
स्वामी समंता जिन भक्ति कैसी,
देगा परीक्षा कब कौन ऐसी ।।6।।

हे ईश! मेरे यह प्रार्थना है।
विवेकशाली मुझको बनादे।
धारूँ क्षमा मैं नित आत्म निष्ठा,
कर्त्तव्य हो जीवन की प्रतिष्ठा ।।7।।

***

परीक्षा-3

क्या-क्या न झेले उपसर्ग मैंने,
क्या-क्या न बाधा हमने सही है।
जो देवता सा तुम पूजते हो,
देनी परीक्षा हमको पड़ी है।।1।।

श्री राम जी ना वनवास जाते,
कैसे अयोध्या फिर लौट पाते?
ना धर्म जीता नहि धर्म धारी,
होती अमा को फिर क्या दिवाली।।2।।

जो शेर संकल्प मुनि से न लेता,
धारी प्रतिज्ञा यदि तोड़ देता।
कैसे महावीर भगवान होता,
तीर्थंकरों में शुभनाम होता।।3।।

जो पार्श्व स्वामी यदि क्रोध लाते,
कैसे प्रतिज्ञा अपनी निभाते।
कैवल्य देवी बरती न देखो,
निर्वाणता क्या भगवान पाते?।।4।।

थी दूर शाला वह मील अस्सी,
जो उम्र मेरी दश वर्ष की थी।
माता-पिता का वह प्यार छोड़ा,
ऐसी पढ़ाई करनी पड़ी थी।।5।।

***

परीक्षा-4

हे मित्र! मेरे यह सीख ले ले,
संसार सारा करले परीक्षा।
तू जो गुणी है अपने गुणों से,
तेरे सिवा कौन करे समीक्षा।।1।।

माँ अंजना जो यदि धैर्य खोती,
क्या भाग्यशाली हनुमान पाती?
देने परीक्षा भयभीत होती,
क्या वीर माता वह भी कहाती?।।2।।

श्रीकृष्ण जन्मे उस जेल में थे,
जहाँ परीक्षा उस ही घड़ी थी,
था शत्रु का देश व छद्म सारा,
जेता रहे हैं शिशु कृष्ण प्यारे।।3।।

देती न सीता! यदि जो परीक्षा,
ज्वाला न होती जल कुण्ड धारा।।
न राम लेने तब शीघ्र आते,
न देव सीता ! जयगान गाते।।4।।

***

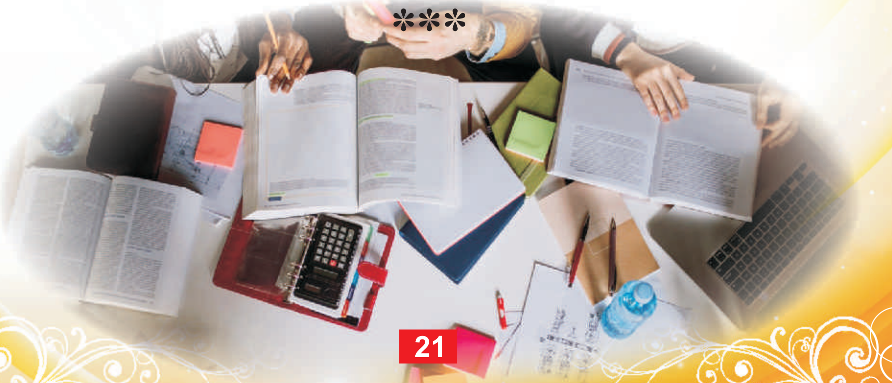

धैर्य

इन्द्रवज्रा छन्द

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ = 11 वर्ण

जो धैर्य के बीज वपें दिलों में,
जीना सिखाते हर मुश्किलों में।
मीठा ही होगा फल धैर्य का ये,
थोड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।।1।।

सारी किताबें अब बाँध देना,
होगी परीक्षा न किताब से है ।
ना लेखनी ना मसि-पत्र लेना,
क्योंकि परीक्षा अब धैर्य की है।।2।।

कैसी परीक्षा किसकी परीक्षा ?
होगी कहाँ पे किसको पता है?
उत्तीर्ण होना यदि चाहते हो,
तो धैर्यशाली नहीं धैर्य खोना।।3।।

हारे हुए से यह सीख लेना,
जो धैर्य खोते वह हार जाते।
जो सीखना हो जयमंत्र प्यारे,
जीते हुए से बस धैर्य सीखो।।4।।

डाली लगा जो पक जाय अच्छा,
वो ही रसीला फल स्वाद देता।
स्वादिष्ट ऐसा फल चाहते तो,
थोड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।।5।।

***

लक्ष्य-1

-आचार्य विभवसागर

पथ कंटक कीर्ण भले चलना,
पर लक्ष्य सदा, हित में चुनना।
पल दो पल का यह कष्ट अरे,
सब शाश्वत इष्ट प्रदान करे।।1।।

घबरा मत, मानव लक्ष्य तुझे,
पुरुषार्थ करो, मिल ही सकता।
धर धीरज राम धरा उनसा,
अपना अभिमान स्वयं रखना।।2।।

उपलब्ध हुआ वह भाग्य अरे,
श्रम साध्य अभी कुछ है करना।
वह शेष अशेष प्रयास करो,
निज मंजिल पे फिर वास करो।।3।।

वह बीज भला वपना उसको,
गढ़ना दबना, उगना जिसको।
जल सिंचन नीर पिला करके,
उगता, बढ़ता, खिलता-फलता।।4।।

***

लक्ष्य-2

–आचार्य विभवसागर

लक्ष्य उच्च हो सदा, मिले सुश्रेय आपको।
ध्येय प्राप्ति काल में, महान धैर्य चाहिए।।
शूर, वीर, साहसी, बने रहो बड़े चलो,
धीर हो बढ़े चलो, सुवीर हो बड़े चलो।।1।।

श्रेष्ठ साधना करो, विराधना करो नहीं।
भावना महान हो, विभूतियाँ बुला रहीं।।
सिद्धियाँ पुकारती, विनम्र द्वार पे खड़ीं।
पाँव दो बढ़ाइये, सु-हाथ में उठाइए।।2।।

धर्म पन्थ है महान्, त्याग पन्थ श्रेष्ठ है
पौरुषी महान तू, विचार सर्वश्रेष्ठ है।।
चूकना न लक्ष्य से, भले लड़ो, गिरो, मरो।
लक्ष्य पे बड़े चलो, सु लक्ष्य पे बड़े चलो।।3।।

कीर्ति के विधान में, प्रयत्न को न भूलिये।
निष्प्रमाद होय नित्य, लक्ष्य भेद कीजिए।।
जाग जा अरे सुमित्र, भारती जगा रही।
भाग्य का विधान आज, हाथ से लिखा रही।।4।।

***

प्रतिज्ञा

–आचार्य विभवसागर

महावीर के महाव्रतों का, दान तुम्हें मैं दे दूँगा।
तेरे भीतर छुपा हुआ, भगवान तुम्हें मैं दे दूँगा।।

महावीर की महा तपस्या, सभी समस्या दूर करे।
महाव्रतों की आत्म साधना, निजानंद भर पूर भरे।।
जिओ और जीने दो सबको, ज्ञान तुम्हें मैं दे दूँगा।
तेरे भीतर छिपा हुआ, भगवान तुम्हें मैं दे दूँगा।।
महावीर के महाव्रतों..............................

महावीर से मुझे मिला जो, मुझसे तुमको वही मिला।
मुझसे आकर मिला हुआ हो, महावीर से वही मिला।।
रत्नत्रय के महारत्न की, खान तुम्हें मैं दे दूँगा।
तेरे भीतर छुपा हुआ, भगवान तुम्हें मैं दे दूँगा।।
महावीर के महाव्रतों..............................

महामंत्र की महाराधना, तुमको यहाँ सिखाऊँगा।
महामंत्र के महाफलों का, परिचय तुम्हें कराऊँगा।।
जिओ अनंतो काल सदा वो, प्राण तुम्हें मैं दे दूँगा।
तेरे भीतर छुपा हुआ, भगवान तुम्हें मैं दे दूँगा।।
महावीर के महाव्रतों..............................

***

विवेक

–आचार्य विभवसागर

श्रमी बनो शमी बनो, दमी बनो सुआदमी।
कमी नहीं कभी रहे, विशेष धान्य दाम की।।
निधान हो महान हो, विशेष दानवान हो।
गरीब देवता कहे, कि आप मात्र प्राण हो।।1।।

अधर्म पे सुधर्म की, सदा ही जीत हो रही।
गुणीजनों सुनो सदा, विशेष नीति हो रही।।
जिनेन्द्र की महानता, किसे अरे पता नहीं।।
मुझे अनंत काल से, जिनेन्द्र प्रीति हो रही।।2।।

मिला नहीं कभी सदा, बिना विशेष पुण्य के।
खिला नहीं सरोज भी, बिना दिनेश आपके।।
मुझे जु चाहते यहाँ, सुने विनीत भाव से।
मिटाय राग-द्वेष लो, मिले सुमित्र आप से।।3।।

क्षमा क्षमा क्षमा करो, न कोप आप कीजिए।
विवेक चक्षु खोलके, विवेक दान दीजिए।।
विराग के सुपुत्र हो, विरागता हि शोभती।
अहो मुनीश आज आप, आत्मध्यान कीजिए।।4।।

***

काव्य तीर्थ

–आचार्य विभवसागर

वह गीत अभी लिखना मुझको,
निज आत्म प्रदेश लखें जिसको।
वह गीत सुभाषित जीवन में,
नित प्रेम भरे, नित क्षेम भरे।।1।।

कवि भाव भला, बन काव्य कला,
कविता कवि को सुख दान करे।
मृत जीवन में, नव प्राण भरे,
वह प्राण भरूँ कविता तुझमें।।2।।

कविता रचना यह श्रेष्ठ कला,
सब ओर भला, सब ओर भला।
अपने शुभ भाव प्रदान करो,
श्रुत ज्ञान कला, रथ चला चला।।3।।

***

गुरु स्मरण

–आचार्य विभवसागर

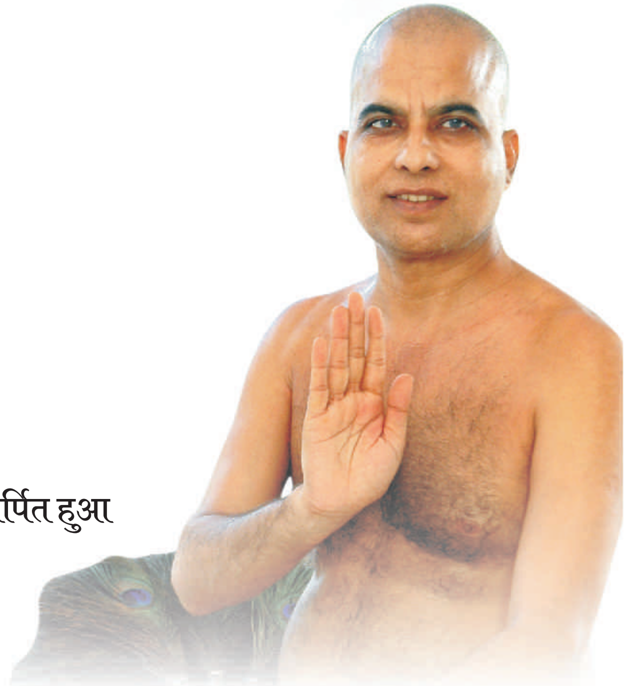

मैंने, अपने गुरु को जितना
भगवान रूप देखा,
मैं उतना भगवान बना।
मैंने, अपने गुरु को
जितना महान रूप देखा
मैं उतना महान बना
मैंने, अपने गुरु को
नेक इन्सान के रूप में देखा
मैं नेक इन्सान बना
मैंने, अपने गुरु को
जितना चाहा
मुझे सबने उतना चाहा
मैं, अपने गुरु को जितना समर्पित हुआ
मुझमें उतना कला, कौशल
गुरु ने भरा
परन्तु मैंने, अपने गुरु में
जो कमियाँ देखीं सो
वे सब कमियाँ दैव योग
से मुझमें आज तक हैं
काश! मैंने कमियाँ न
देखी होती?

* आचार्य विभव सागर
(बाँसवाड़ा (राजस्थान)

***

वैराग्य संवाद
कृतान्तवक्त्र-राम का

–आचार्य विभवसागर

दोहा

नर-सुरेन्द्र नागेन्द्रगण, जिनपद शीष झुकाय।
त्रिभुवन भूषण केवली, वचन विराग जगाय।।
जिनके दर्शन से जगे, जीवन में सौभाग्य।
जिनके वचनों से जगे, जीवन में वैराग्य।।1।।

जिनपद पूजें इन्द्रगण, भक्ति भाव शिरनाय।
नमूँ सकल भूषण श्रमण! सुनूँ वचन हरषाय।।2।।

हम भूले भववास में, तुम हो दीप समान।
हमें मोक्ष की प्यास है, तुम सरवर भगवान।।3।।

सुन गुरुवर के शुभ वचन, जाग उठा वैराग्य।
भव अनंत के बाद ही, अब आया सौभाग्य।।4।।

मिथ्यापथ में भटक कर, घूमा बहु संसार।
दु:ख अनंता भोगकर, जाना जगत असार।।5।।

अब मुनिपद धारण करूँ, ऐसे भाव सुहाय।
सेनापति के वचन सुन, बोले राम बुलाय।।6।।

दुर्धर चर्या साधु की, धरोगे कैसे आप?
कंटक सम दुर्जन वचन, सहोगे कैसे आप।।7।।

शीत ऊष्ण की वेदना, वरषा ऋतु के बाण।
और परीषह सैकड़ों, कौन करेगा त्राण।।8।।

कोमल शय्या छोड़कर, कंकर पत्थर बीच।
कहाँ आप सो पाओगे, दो पल आँखें मीच।।9।।

परघर जा करपात्र में, पर इच्छानुसार।
क्या भोजन कर पाओगे, नवधा विधि अनुसार।।10।।

सुनकर वच रघु राम के, विनय भाव मन धार।
सेनापति बोला तभी, युक्ति शास्त्र अनुसार।।11।।

नेह रसायन आपका, जो तजने तैयार।
उसके लिए असाध्य क्या, हो सकता दुःखभार।।12।।

ज्वाला जलते गेह से, मनुज निकलना चाह।
कौन दयालु रोकता, फिर तो यह शिवराह।।13।।

मृत्युरूप इस वज्र से, ये तन गिर न जाय।
उससे पहले साधु बन, आतम ध्यान लगाय।।14।।

आज नहीं तो कल कभी, निश्चित होय वियोग।
तो फिर ज्ञाता आप हो, आया दीक्षा योग।।15 ।।

यद्यपि इष्ट वियोग से, होगा दुःख अपार।
भव-भव में दुःख न मिले, आज दुःख स्वीकार।।16।।

आँसू रोके राम ने, कहा धन्य कृतान्त।
जिन दीक्षा धर तुम करो, जन्म-मरण का अंत।।17।।

जाते हो निर्वाणपुर, सुरपुर यदि मिल जाय।
मैं सम्बोधन योग्य हूँ, हमको बनो सहाय।।18।।

यदि मेरे उपकार को, करते हो स्वीकार।
नहीं भूलना बात ये, करो प्रतिज्ञा धार।।19।।

जैसी आज्ञा आपकी, वैसा होगा कार्य।
धरूँ सकल सन्यास मैं, दे दो आज्ञा आर्य।।20।।

***

सती अंजना संवेदना

–आचार्य विभवसागर

दीन हीन सी दिवस बिताती, अश्रुधार में रैन गई।
इधर-उधर बेचैन पड़ी हूँ, मिलता पल भर चैन नहीं।।
मेरे दुःख को समझ न पाते, मैं पीड़ा कह पाती न।
असह वेदना मानस दुःख है, मैं इसको सह पाती न।।1।।

पल भर का संयोग मिला था, पर वियोग है वर्षों से।
नाम मात्र ले जीवित रहती, व्यथित हुई संघर्षों से।।
क्या कर लूँ, मैं क्या कर लूँ मैं, यही सोच में पड़ी हुई।
जितना-जितना सोच रही हूँ, उतने दुख में बड़ी हुई।।2।।

अकरणीय का फल न मिलता, अपनी करनी का फल है।
इतना चिंतन कर जी लेती, माँ जिनवाणी संबल है।।
अरे समस्या देने वाले, कभी समस्या हल देना।
अब तक इतने गम झेले हैं, सहने की हिम्मत देना।।3।।

सूरज बिन आकाश न शोभे, चंदा बिन रजनी का क्या?
सुगुण बिना विद्या न शोभे, और आप बिन मैं भी क्या?
यद्यपि आप बसे हो मन में, फिर भी क्यों संताप करें?
सबके दुःख जब हर लेते हैं, क्यों न मेरे पाप हरें?।।4।।

नाथ आपकी भक्त हृदय में, तुम प्रसन्नता वर्षाओ।
दर्शन दे संतुष्ट करो मन, नहीं खिन्नता दर्शावो।।
तरस रही हूँ तरस रही हूँ, और अधिक न तरसाओ।
मन मंदिर के देव हमारे, मन मंदिर में आ जाओ।।5।।

भाग्यहीन क्या इतने हम हैं, दर्शन भी न पा पायें।
जो उपाय हो तुम बतलाओ, द्वारे हम ही आ जायें।।
अणु मात्र भी पुण्य किया हो, किसी जन्म में कहीं कभी।
तो मुझको दर्शन दे देना, नाथ हमारे अभी यहीं।।6।।

शुभ मुहूर्त वह कब आएगा, तुमसे नाथ मिलन होगा।
दर्शन की प्यासी अखियन को, जब तेरा दर्शन होगा।।
आँख उठाकर भी न देखा, और बात तो बात ही क्या।
दिन में भी छिन भर न मिलते, और रात तो रात ही क्या।।7।।

***

मृत्यु

–आचार्य विभवसागर

कौन अनपढ़ है यहाँ, दो शब्द जिसने न पढ़े हों।
जन्म लेकर मौत के, पन्ने पलटने न पड़े हों।।1।।

बेसब्र हो इंतजार में, जन्म के द्वारे खड़ी है।
मौत उसका नाम है जो, जीतकर फिर-फिर लड़ी है।।2।।

मत सोचो मौत आकर, अलविदा हो जायेगी।
जन्म लोगे तुम नया, उस पर फिदा हो जायेगी।।3।।

***

गुणवान बनो

–आचार्य विभवसागर

गुण का बहुमान हुआ करता,
गुणवान बनो, गुणवान बनो।

धन छूट चले, तन छोड़ चले,
मन छू सकते, गुण धाम बनो।
तन यौवन जीवन नश्वर है,
गुण चिंतन से गुणग्राम बनो।।1।।

गुण ज्ञान करो, गुणगान करो,
गुण प्रीति जगा, गुणदान करो।
गुण से गुण गान मिला करता,
गुण से भगवान स्वयं बनता।।2।।

गुण की महिमा, गुण की गरिमा,
गुण की प्रतिमा, जग में पुजती।
गुण पूज्य सदा निज में धरते,
जग पूज्य वही नर हो रहते।।3।।

***

मेरी कविता

–आचार्य विभवसागर

मेरी कविता मम प्राण है,
मेरी कविता श्रुत ज्ञान है।
मेरी कविता गुण गान है,
मेरी कविता ध्रुव धाम है।।1।।

मेरी कविता गुण प्रीति है,
मेरी कविता निज रीति है।
मेरी कविता रस-पान है,
मेरी कविता श्रुत दान है।।2।।

मेरी कविता शुभ यत्न है,
चारित्र निधीश! प्रयत्न है।
मेरी खुशियाँ यह बोलती,
मेरी गणना यह खोलती।।3।।

मैंने नव दीप जला रखे
आमंत्रित आप भला सखे!
श्रद्धा परिभाषित हो नहीं,
मेरी कविता कुछ गा सके।।4।।

जो श्रेय मिला जिन देव से,
जो बोध मिला गुरु देव से।
जो ज्ञान कला श्रुत देव से,
मैं धन्य हुआ नर देह से।।5।।

सर्वज्ञ! जिनेश्वर! देव हे!
अर्हन्त! किए उपकार हे!
वाणी जिन भाषित आपकी,
सर्वौषधि है भाव ताप की।।6।।

तेरी रचना नर गा सके,
ऐसा वह मानुष कौन है?
जो ज्ञान मिला वरदान है,
गाथा गुण गान सुना सके?8।।

तेरे उपकार अनंत हो।
मेरे तुम ही भगवंत हो।
चाहूँ कुछ ना वरदान हो,
तेरे चरणों अवसान हो।।8।।

हे नाथ! मुझे यह ध्यान हो,
पाया तुमसे वह ज्ञान हो।
जागूँ निज में निज भान हो,
तेरे चरणों अवसान हो।।9।।

***

प्रार्थना

–आचार्य विभवसागर

चलें हम ज्ञान के मंदिर, बनायें विश्व को सुंदर।
जलायें ज्ञान की ज्योति, विनय से आत्मा अंदर।।

हमारा देश यह भारत, बने सर्वोदयी भारत।
उतारें आरती हम सब, सदा सर्वोदयी भारत।।
समर्पित राष्ट्र निर्माता, लिए हैं प्रार्थना के स्वर।
जलायें ज्ञान की ज्योति, विनय से आत्मा अंदर।।1।।

रचा तन मातृभूमि ने, समर्पित मातृभूमि को।
रचा मन राष्ट्रभक्ति ने, समर्पित राष्ट्रभूमि को।।
समर्पित प्राण मेरे हैं, हमारे देश के खातिर।
जलायें ज्ञान की ज्योति, विनय से आत्मा अंदर।।2।।

प्रभो! दो रौशनी ऐसी, ध्वजा ऊँचा दिखाई दे।
खिले हों फूल से चेहरे, चमन खिलता दिखाई दे।
परस्पर भाई-चारा हो, जगा दो प्रेम वह ईश्वर।
जलायें ज्ञान की ज्योति, विनय से आत्मा अंदर।।3।।

जहाँ पर देवता गुरुवर, शिष्यगण ही पुजारी हैं।
जहाँ पर ज्ञान की पूजा, सुयश जयघोष जारी हैं।।
सरलता दें, सफलता दें, हमारे ज्ञान के प्रस्तर।
जलायें ज्ञान की ज्योति, विनय से आत्मा अंदर।।4।।

2011-गढ़ाकोटा (म.प्र.)

***

काव्य भारती

संत आगमन

–आचार्य विभवसागर

बोयकर बबूल बीज, आम नहीं पाओगे,
आम गर पाना है तो, आम ही लगाइये।

मोह की अमावसी में, रोशनी न पाओगे,
पाना है प्रकाश तो, चिराग दो जलाइए।।

सो रहे अनादि से, मोह की इस नींद में,
जाग-जाग जाग चेतन, जग को जगाइए।

जीवन में धर्म क्या, धर्म का है मर्म क्या?
जानना है प्यारे, साँचे सन्त को बुलाइये।।

***

समर्पण

–आचार्य विभवसागर

मैं सर्वस्व लुटाने आया, लूटो मेरे भाई।
नव-प्रभात की नयी किरण सम, फूटो मेरे भाई!

मेरा जो है उसे बाँट दूँ, केवल पर को।
इसलिए मैं निकल पड़ा हूँ, आज इधर को।।
अन्तर के द्वन्द्वों से अब तो, छूटो मेरे भाई!
नव-प्रभात की नयी किरण सम, फूटो मेरे भाई!।1।।
मैं सर्वस्व.....

मैं हूँ कौन कहाँ से आया, जान मुझे किधर को।
बस इतना सा भेद जानने, आओ अपने घर को।।
सब अपने हैं, नहीं किसी पर, रूठो मेरे भाई!
नव प्रभात की नयी किरण सम, फूटो मेरे भाई!
मैं सर्वस्व.....

संचित से वंचित मैं कर दूँ, यह अधिकार नहीं।
अर्चित से अर्जित मैं कर लूँ, यह स्वीकार नहीं।।
अपने पौरुष से कुछ पाने, टूटो मेरे भाई।
नव-प्रभात की नयी किरण सम, फूटो मेरे भाई।।
मैं सर्वस्व.....

टीकमगढ़-2010

***

संकल्प

–आचार्य विभवसागर

मैंने उगते सूर्य को देखा,
पूछा-
अहो सूरज! इतनी ठण्डी में
इतनी जल्दी,
इतनी सुबह-सुबह कैसे आ गये?

सूरज बोला-
मैं जग को जगाने आया हूँ।
मैंने कहा-
आपके आने से,
जग को जगाने से,
क्या? जग जाग जायेगा
सूरज बोला-
आस तो यही है
प्रयास तो यही है,
विश्वास तो यही है।
देखो! हरे-भरे पौधे जाग उठे,
सरोवर में कमल खिल उठे,
बिछुड़े हुए पंछी मिल उठे।
जब यह जाग सकते हैं तो
चिंतन/प्रज्ञा/विवेकशील प्राणी

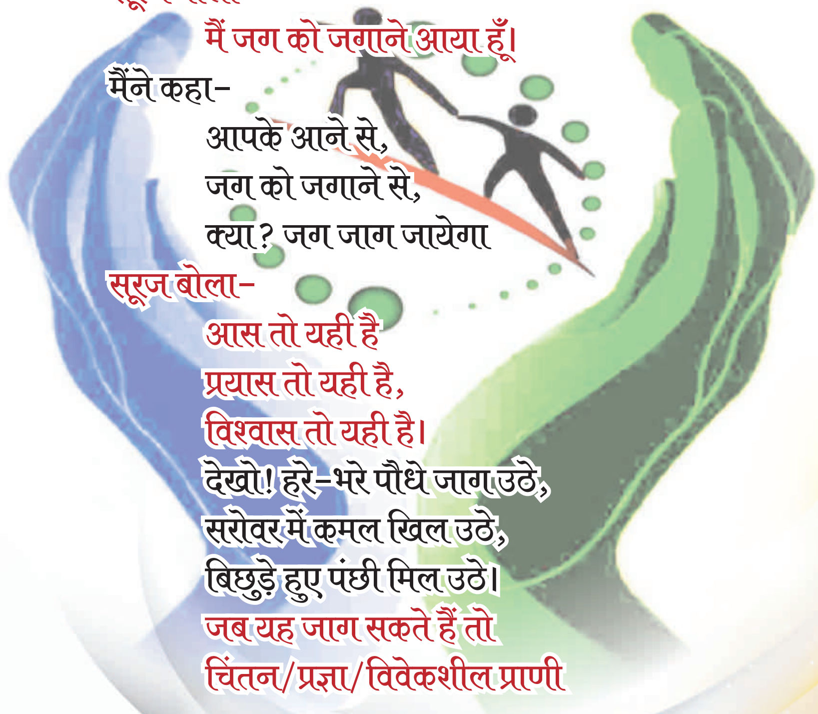

मनुष्य क्यों नहीं जागेंगे?
अवश्य जागेंगे।
जो आज जागेंगे,
उन्हें आज जगाऊँगा
अभी जगाऊँगा।
जो आज न जागे
उन्हें एक रात पछताने के लिए
छोड़ जाऊँगा।
कल फिर आऊँगा,
आता ही रहूँगा,
जगाता ही रहूँगा,
मेरा संकल्प है-
मैं एक दिन सम्पूर्ण जग को
जगा कर रहूँगा।

शिरडशहापुर (महा.)
2006

***

भाग्य

–आचार्य विभवसागर

न जाने कब किसका चमके, भाग्य-सितारा।
प्रबल भाग्य के आगे, ईश्वर हिम्मत हारा।।

महावीर के आत्मध्यान में, कब आयी थी चंदनबाला।
चंदनबाला ने ही अहरह, फेरी अश्रु मोती माला।।
कौन कहेगा महावीर ने, खोली उसकी कारा।
प्रबल भाग्य के आगे, ईश्वर हिम्मत हारा।।1।।
न जाने.....

यहाँ-कहाँ छोटी सी कुटिया, अवध-प्यारे क्यों आयेंगे?
अरी अपावन! भोली पगली! तेरे बेर कहाँ खायेंगे।।
क्या कहते हो? स्वयं प्रभु ने खोला द्वारा।
प्रबल भाग्य के आगे, ईश्वर हिम्मत हारा।।2।।
न जाने.....

अकृत पुण्य अरे क्या जाने, वह पड़गाना।
वह तो जाने पाँव पकड़कर तुम्हें मनाना।।
उसके ही घर मुनिराज का हुआ अहारा।
प्रबल भाग्य के आगे, ईश्वर हिम्मत हारा।।3।।
न जाने.....

टीकमगढ़-2010

***

परोपकार

–आचार्य विभवसागर

मैं जानता हूँ
मुझे एक दिन बुझना पड़ेगा
पर दुनियाँ को–
प्रकाश देने के लिए
मैं सदा जलता रहूंगा।

मैं जानता हूँ
मुझे एक दिन रुकना पड़ेगा
पर जब तक
कदमों में ताकत रहेगी
दुनियाँ को सन्मार्ग दिखाने,
मैं सदा चलता रहूँगा।

कारंजा–2004

***

कर्तव्य

–आचार्य विभवसागर

कर्तव्य है जीवन सखा, कम इसे न कीजिए।
कर्तव्य करते जिन्दगी से, आखिरी दम लीजिए।।

छोटा बड़ा कहकर इसे, टालना दुर्भाग्य है।
कर्तव्य–पालन–मनुज का सबसे बड़ा सौभाग्य है।।

आपका ही आप हित में, किया जाना कार्य है।
तन मन समर्पित हो उसे, कर्तव्य तप अनिवार्य है।।

विश्व हितकर, विश्व सुखाकर, विश्व में सुन्दर कहा।
सद्गुणों का कोश कह, सुख का समुन्दर है कहा।।

कर्तव्य के भावों बिना, मन्तव्य मिलता है नहीं।
कर्तव्य पथ पर बिन चले, गन्तव्य मिलता है नहीं।।

अधिकार न, कर्तव्य माँगो, वह स्वयं मिल जायेगा।
प्रगति का द्वार प्यारे! स्वयं ही खुल जायेगा।।

कर्तव्य की इस वेदिका पर, भीरूता को छोड़ दो।
आत्म वैभव का परिचय, वीरता से जोड़ दो।।

जन्म लेना मातृभू पर, मनुज का बेकार है।
वरदान पा नर देह का, कर्तव्य से न प्यार है।।

***

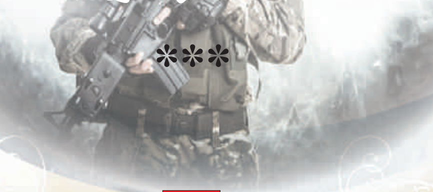

कमजोर मत हो

–आचार्य विभवसागर

कमजोर मत हो तू, विश्वास इतना रख।
ये कर्म विनश्वर हैं, निज चेतना को लख।।

जो तुझे सताते हैं, उन पर जय पायेगा।
जो निंदा करता है, वह महिमा गायेगा।
बढ़ता जा शिवमग में, बस साहस इतना रख।
ये कर्म विनश्वर हैं, निज चेतना को लख।।
कमजोर.....

यदि मंजिल पाना है, हरदम बढ़ते जाना।
दु:ख शूल मिलें सुख फूल, उनमें समता लाना।।
मंजिल मिल जायेगी, इसमें न कोई शक।
ये कर्म विनश्वर हैं, निज चेतना को लख।।
कमजोर.....

दुनियाँ को मत देखो, यदि निज को पाना हैं।
तुम कूप नहीं छानो, यदि प्यास बुझाना हैं।।
पुरुषार्थ करो निज में, औ शांति-सुधा-रस चख।
ये कर्म विश्वर है, निज चेतना को लख।।
कमजोर मत हो तू, विश्वास इतना रख।
ये कर्म विनश्वर है, निज चेतना को लख।।

1997, टीकमगढ़

***

जिंदगी

–आचार्य विभवसागर

कौन? किसको? दे सकेगा, क्यों करूँ मैं आस्था।
जिन्दगी खुद ही बनाती, सुख दु:खों का रास्ता।

कल उपार्जित कर्मफल ही, आज मिलता है सखे!
लेखनी हमने उठाई, कर्म पृष्ठों पर लिखे।।
किसका मेरे सुख दु:खों से, कब रहा है वास्ता।
जिन्दगी खुद ही बनाती, सुख-दु:खों का रास्ता।।
कौन.....

न विधाता है विधि का, सत्य इसको मान लो।
न प्रदाता है निधि का, तथ्य ऐसा जान लो।
दिव्य वाणी दे हमें यह, कह रहा है शास्ता।
जिन्दगी खुद ही बनाती, सुख दु:खों का रास्ता।
कौन.....

टीकमगढ़-1997

***

वर्द्धमान वंदना

–आचार्य विभवसागर

आने से पहले अरे अवनि पे, जो रत्न वर्षा हुई।
जो कल्याण हुआ अरे जन्म का, ये सृष्टि हर्षा गयी।।
ये सिद्धार्थ पिता सु–मात त्रिशला, सौभाग्य भण्डार हो।
श्री तीर्थंकर वर्द्धमान जिन हे, मेरा नमस्कार हो।।1।।

दीक्षा तो अनुभूति का विषय है, वैराग्य के साथ हो।
मूर्च्छा भाव समग्र भार तजके, औ हाथ पे हाथ हो।।
मुद्रा भी जिन रूप हो नगन हो, मानुष्य का सार हो।
श्री तीर्थंकर वर्द्धमान जिन हे, मेरा नमस्कार हो।।2।।

तेरी ध्यान त्रयोदशी अमर है, ऐसा किया ध्यान है।
ये संसार मना रहा परव ये, तेरा दिया दान है।।
तू तो योग निरोध ध्यान करके, संसार के पार हो।।
श्री तीर्थंकर वर्द्धमान जिन हे, मेरा नमस्कार हो।।3।।

पा निर्वाण महान् उत्सव दिया, आनंद–नंदावली।
ये त्यौहार अरे सभी जगत का, सर्वत्र दीपावली।।
श्री पावापुर सिद्ध भूमि जग में, निर्वाण आधार हो।
श्री तीर्थंकर वर्द्धमान जिन हे, मेरा नमस्कार हो।।4।।

जो कैवल्य महान ज्ञान प्रकटा, हे शुक्ल ध्यानी प्रभो।
तीनों लोक दिखे चराचर सभी, हे पूर्ण ज्ञानी विभो।।
हे सर्वज्ञ हितोपदेश सुनके, चैतन्य उद्धार हो।
श्री तीर्थंकर वर्द्धमान जिन हे, मेरा नमस्कार हो।।5।।

तेरी मंगल देशना प्रभु हुई, सिद्धि अनेकान्त से।
जानो द्रव्य पदार्थ तत्त्व नय से, संदेश स्याद्वाद् से।।
सम्यग्ज्ञान प्रमाण सूत्र कहके, संक्षेप विस्तार हो।।
श्री तीर्थंकर वर्द्धमान जिन हे, मेरा नमस्कार हो।।6।।

आत्मा पुद्गल भिन्न–भिन्न रहते, ये तत्त्व का सार हो।
जो भी अन्य कहा–सुना–वचन में, सो तत्त्व विस्तार हो।।
ये बोधामृत पान जीव करके, संसार के पार हो।
श्री तीर्थंकर वर्द्धमान जिन हे, मेरा नमस्कार हो।।7।।

तेरी ये निधियाँ लुटा हम रहे, संदेश देके विभो।
जो माणिक्य जवाहरी रतन से, भी कीमती हैं विभो।।
लूटे ये जनता सुखी रह सके, मांगल्य संचार हो।
श्री तीर्थंकर वर्द्धमान जिन हे, मेरा नमस्कार हो।।8।।

घाटोल–2020

***

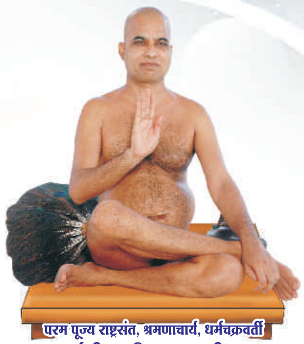

परम पूज्य राष्ट्रसंत, श्रमणाचार्य, धर्मचक्रवर्ती
गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज

विराग वंदना

–आचार्य विभवसागर

मेरा नम्र नमोस्तु हो गुरु सदा, श्रद्धा भरी भावना।
जीओ आप अनंत काल जग में, मेरी यही प्रार्थना।।
दाता आप महान ज्ञान धन के, सर्वोदयाकार हो।
पूज्याचार्य विरागसागर सदा, मेरा नमस्कार हो।।1।।

तेरा उज्ज्वल कीर्तिगान जग में, फैले सदा सर्वदा।
चर्याचार्य विरागसागर गणी, वैराग्य के देवता।।
देखा मात्र विराग भाव तुम में, अध्यात्म साकार हो।
पूज्याचार्य विरागसागर सदा, मेरा नमस्कार हो।।2।।

भो आचार्य समंतभद्र सम हो, है तर्क शैली तथा।
श्री अर्हद् बलि कुन्द कुन्द सम हो, शुद्धात्म केली यथा।।
संस्तोता ऋषि पूज्यपाद सम हो, शास्त्रज्ञ आधार हो।
पूज्याचार्य विरागसागर सदा, मेरा नमस्कार हो।।3।।

षट्खण्डागम ग्रन्थकार सम हो, सिद्धान्त वाचस्पति।
टीकाकार प्रभेन्दु वीर सम हो, भाषा करे आरती।
तेरा दर्शन शुद्ध भाव करके, वैराग्य संचार हो।
पूज्याचार्य विरागसागर सदा, मेरा नमस्कार हो।।4।।

सम्यग्दर्शन शोध कार्य करके, शुद्धोपयोगी कृति।
होती है जयवंत आज जग में, तेरी लिखी स्वीकृति।।
हे स्याद्वाद् प्रवीण न्याय नय में, आत्मज्ञ व्यापार हो।
पूज्याचार्य विरागसागर सदा, मेरा नमस्कार हो।।5।।

तीनों लोक प्रसिद्ध नाम यश है, आचार्य हो देवता।
तेरे पावन पाद पंकज छुऊँ, चारित्र दाता पिता।।
पंचाचार निजात्म तत्त्व लखते, ऐसा सदाचार हो।
पूज्याचार्य विरागसागर सदा, मेरा नमस्कार हो।।6।।

चौथा काल अभी यहाँ सदन में, क्या शान्ति आनन्द हो।
ये ध्यानस्थ महान साधुगण हैं, वैराग्य के केन्द्र हो।।
ज्ञान–ध्यान तपो सुलीन तुममे, श्री मूल आचार हो।
पूज्याचार्य विरागसागर सदा, मेरा नमस्कार हो।।7।।

ये निर्द्वन्द तपी जहाँ विचरते, आनंद–आनंद हो।
ये आचार विशुद्धता विमलता, स्वाध्याय सानंद हो।।
जो निर्लेप निसंग वायु सम हैं सर्वत्र निर्भार हो।
पूज्याचार्य विरागसागर सदा, मेरा नमस्कार हो।।8।।

घाटोल–2020

***

परम पूज्य रत्नत्रय तीर्थ
आचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी महाराज

विशुद्ध वंदना

–आचार्य विभवसागर

आर्यावर्त विशुद्ध देश जिनका,जात्यादि वंशादि भी।
है योगत्रय शुद्धता विमलता, संस्कार भाषा सभी।।
मेरे मंगलकार हो गुरु सदा, हे देवता दर्श दो।
चर्याचार्य विशुद्ध सागर सदा, जीवन्त आदर्श हो।।1।।

पाया दर्शन आपका शुभ हुआ, जागा अहो पुण्य ये।
गाया गीत विशुद्ध भाव मन से, जिह्वा हुई धन्य ये।।
पंचाचार प्रपालते समय से, उत्साह उत्कर्ष हो।।
चर्याचार्य विशुद्ध सागर सदा, जीवन्त आदर्श हो।।2।।

तू निर्लेप सदा पवित्र नभ सा, सामुद्र गम्भीरता।
तू नि:संग सदा चले पवन सा, ये भूधरी धीरता।।
ये गंधोदक सी पवित्र रज हैं, माथा लगा हर्ष हो।
चर्याचार्य विशुद्ध सागर सदा, जीवन्त आदर्श हो।।3।।

तू निष्काम मुनीश आदि जिन सा, पादाब्ज विश्राम दो।
तेरे पाद पवित्र औषधिमयी, आरोग्य के धाम हो।।
होवे नित्य प्रभात मंगलमयी, मांगल्य ये वर्ष हो।
चर्याचार्य विशुद्ध सागर सदा, जीवन्त आदर्श हो।।4।।

तेरा निश्चय मेरु सा अटल है, संकल्प उत्साह भी।
तेरा निर्णय भी सदा सुहित में, तेरी भली राह भी।।
ओ मेरे गुरु देवता ह्रदय में, तेरा पदस्पर्श हो।।
चर्याचार्य विशुद्ध सागर सदा, जीवन्त आदर्श हो।।5।।

तू नाहीं सुनता अरे जगत की, सर्वज्ञ की मानता।
तू कैसे मनता अभी गुरुवरा, ये मैं नहीं जानता।।
तू विद्वान क्षमा निधान यति है, सिद्धान्त निष्कर्ष हो।
चर्याचार्य विशुद्ध सागर सदा, जीवन्त आदर्श हो।।6।।

तेरे आनन सौम्यता, सरलता, गम्भीरता धीरता।
तेरे भीतर शुद्धता, सहजता, वक्तृत्व माधुर्यता।।
तेरे हार्दिक प्रेम भाव गुण से, ये संघ उत्कर्ष हो।
चर्याचार्य विशुद्ध सागर सदा, जीवन्त आदर्श हो।।7।।

ये जाज्ज्वल्य जिनेन्द्र शासन दिया, तूने जलाया अरें।
वाती धी घृत शील का नित भरे, तू रौशनी भी करे।।
तेरी पावन देशना जगत में, चारित्र आकर्ष हो।
चर्याचार्य विशुद्ध सागर सदा, जीवन्त आदर्श हो।।8।।

घाटोल–2020

***

समाधि भक्ति

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

जिनवाणी रसपान करूँ मैं, जिनवर को ध्याऊँ ।
आर्यजनों की संगति पाऊँ, व्रत-संयम चाहूँ ।।
गुणीजनों के सद्गुण गाऊँ, जिनवर यह वर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 1।।
तेरी छत्रच्छाया......

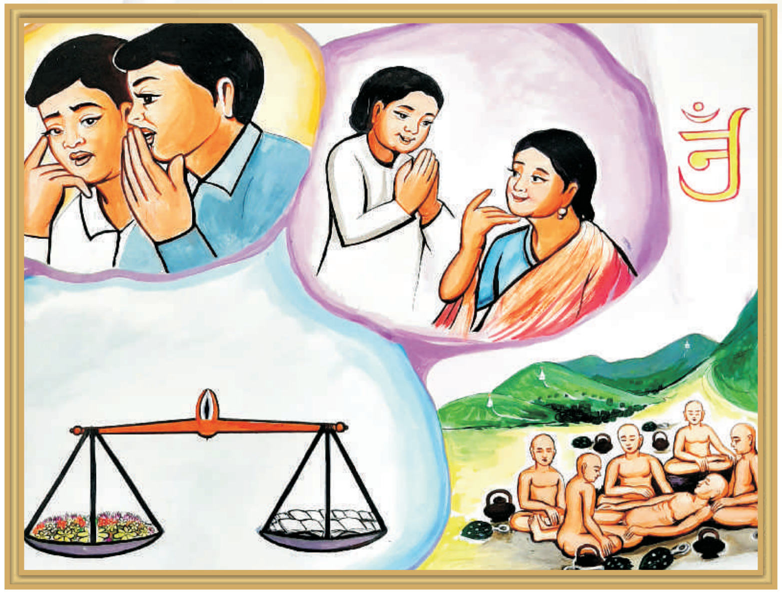

परनिन्दा न मुँह से निकले, मधुर वचन बोलूँ ।
हृदय तराजू पर हितकारी, सम्भाषण तौलूँ ।।
आत्म-तत्त्व की रहे भावना, भाव विमल भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 2।।
तेरी छत्रच्छाया......

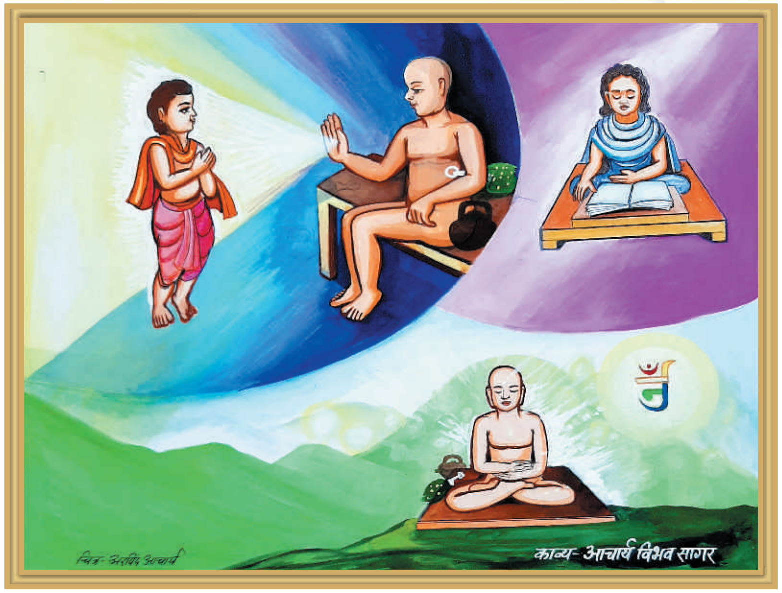

जिनशासन में प्रीति बढ़ाऊँ, मिथ्यापथ छोड़ूँ ।
निष्कलंक चैतन्य भावना, जिनमत से जोड़ूँ ।।
जन्म-जन्म में जैनधर्म यह, मिले कृपा कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 3।।

तेरी छत्रच्छाया......

मरण समय गुरु-पादमूल हो, सन्त समूह रहे ।
जिनालयों में जिनवाणी की, गंगा नित्य बहे ।।
भव-भव में सन्यास मरण हो, नाथ हाथ धर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 4।।

तेरी छत्रच्छाया......

***

ईश प्रार्थना

दरस दो नाथ तुम मेरे, दरस की आस लाये हैं।
तरसते हम रहे स्वामी, तरसने आज आये हैं।।

अरे मैं खान का पाहन, तुम्हारी चोट खाऊँगा।
निकालो खोट तुम मेरी, तुम्हारी ओट आऊँगा।।
तुम्हीं शिल्पी हमारे हो, यही विश्वास लाये हैं।
तरसते हम रहे स्वामी, तरसने आज लाये हैं।।
दरस दो नाथ तुम मेरे...।।1।।

तलाशा आपने मुझको, कहाँ मेरा ठिकाना था।
बड़ी वह भूल मेरी थी, प्रभु तुमको ना जाना था।।
तराशो नाथ अब मेरे यही, अरदास लाये है।
तरसते हम रहे स्वामी, तरसने आज आये हैं।।
दरस दो नाथ तुम मेरे...।।2।।

कहीं जाने वा अन्जाने, किए हो पाप जो मैंने।
कभी भी भाव जगा हो, कहीं संताप का देने।।
भुला दो भूल वह मेरी, यही अहसास लाये हैं।
तरसते हम रहे स्वामी, तरसने आज आये हैं।।
दरस दो नाथ तुम मेरे...।।3।।

तुम्हीं माता त्रिलोकों की, पिता तुम हो त्रिकालों के।
समस्या मैं बना प्रभुवर, तुम्हीं हल हो सवालों के।।
सँवारो भाग्य यह मेरा, चरण में दास आये हैं।।
तरसते हम रहे स्वामी, तरसने आज आये हैं।।
दरस दो नाथ तुम मेरे...।।4।।

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य डॉ. विभवसागर मुनिराज

पूर्व नाम	–	पं. अशोक कुमार जी जैन ''शास्त्री''
जन्म स्थान	–	किशनपुरा (सागर)
जन्मतिथि	–	कार्तिक कृष्ण अमावस्या 2033, तदनुकूल 23 अक्टूबर, 1976
पिताश्री	–	श्रावक रत्न श्री लखमीचन्द्र जी जैन (क्षुल्लक श्री सिद्धसागर जी महाराज)
माताश्री	–	श्राविका–रत्न श्रीमती गुलाबबाई जैन (समाधिस्थ आर्यिका प्राज्ञाश्री माताजी)
शिक्षा	–	इण्टर संस्कृत शास्त्री प्रथम वर्ष
धार्मिक शिक्षा	–	धर्मशास्त्री द्वितीय वर्ष
शिक्षण संस्थान	–	श्री गणेशप्रसाद वर्णी दि. जैन महाविद्यालय, मोराजी, सागर (म.प्र.)
वैराग्य	–	9 अक्टूबर, 1994 को ब्रह्मचर्य व्रत लिया
क्षुल्लक दीक्षा	–	28 जनवरी, 1995, मंगलगिरि, सागर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	–	23 फरवरी, 1996, देवेन्द्र नगर जिला–पन्ना (म.प्र.)
मुनि दीक्षा	–	14 दिसम्बर, 1998, अतिशय क्षेत्र वरासौ, भिण्ड (म.प्र.)
दीक्षा गुरु	–	गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज
आचार्य पद	–	31 मार्च, 2007, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
विशेष	–	जैन आगमरूपी मानसरोवर के राजहंस की तरह झलक देने वाले प्रज्ञा श्रमण की प्रवचन शैली जन–जन द्वारा हृदयग्राह्य है।
रुचि	–	पठन–पाठन, काव्य, सृजन, चिंतन, मनन
कृतियाँ	–	अभी तक आचार्य श्री द्वारा 84 कृतियों की सर्जना की गई है जो इसी पुस्तक में सूचीबद्ध है।
अलंकरण	–	''सारस्वत–श्रमण'', ''सारस्वत कवि'', ''शास्त्र कवि'' ''नय चक्रवर्ती'', ''संस्कृताचार्य'', विद्यावाचस्पति (डॉक्टर)''

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य 108 श्री विभवसागर जी महाराज

रजत रत्नत्रय महोत्सव

2022-2023